

## दोहा

प्रन्वाऊ प्रथम गुरु चरण, बुद्धि ज्ञान गुन खान ।

श्री गणेश शारद सहित, बसों हृदय में आन ॥

अज्ञानी मति मंद मैं, हैं गुरुस्वामी सुजान ।

दोषों से मैं भरा हुआ हूँ तुम हो कृपा निधान ॥

## चौपाई

जय नारायण जय निखिलेशवर । विश्व प्रसिद्ध अखिल तंत्रेश्वर ॥

यंत्र-मंत्र विज्ञान के ज्ञाता । भारत भू के प्रेम प्रेनता ॥

जब जब हुई धरम की हानि । सिद्धाश्रम ने पठए ज्ञानी ॥

सच्चिदानंद गुरु के प्यारे । सिद्धाश्रम से आप पधारे ॥

उच्चकोटि के ऋषि-मुनि स्वेच्छा । ओय करन धरम की रक्षा ॥

अबकी बार आपकी बारी । त्राहि त्राहि है धरा पुकारी ॥

मरुन्धर प्रान्त खरंटिया ग्रामा । मुल्तानचंद पिता कर नामा ॥

शेषशायी सपने में आये । माता को दर्शन दिखलाये ॥

रुपादेवि मातु अति धार्मिक । जनम भयो शुभ इक्कीस तारीख ॥

जन्म दिवस तिथि शुभ साधक की । पूजा करते आराधक की ॥

जन्म वृत्तन्त सुनाये नवीना । मंत्र नारायण नाम करि दीना ॥

नाम नारायण भव भय हारी । सिद्ध योगी मानव तन धारी ॥

ऋषिवर ब्रह्म तत्व से ऊर्जित । आत्म स्वरुप गुरु गोरवान्वित ॥

एक बार संग सखा भवन में । करि स्नान लगे चिन्तन में ॥

चिन्तन करत समाधि लागी । सुध-बुध हीन भये अनुरागी ॥

पूर्ण करि संसार की रीती । शंकर जैसे बने गृहस्थी ॥

अदभुत संगम प्रभु माया का । अवलोकन है विधि छाया का ॥  
युग-युग से भव बंधन रीती । जंहा नारायण वाही भगवती ॥  
सांसारिक मन हुए अति ग्लानी । तब हिमगिरी गमन की ठानी ॥  
अठारह वर्ष हिमालय घूमे । सर्व सिद्धिया गुरु पग चूमें ॥  
त्याग अटल सिद्धाश्रम आसन । करम भूमि आये नारायण ॥  
धरा गगन ब्रह्मण में गूंजी । जय गुरुदेव साधना पूंजी ॥  
सर्व धर्महित शिविर पुरोधे । कर्मक्षेत्र के अतुलित योधा ॥  
हृदय विशाल शास्त्र भण्डारा । भारत का भौतिक उजियारा ॥  
एक सौ छप्पन ग्रन्थ रचयिता । सीधी साधक विश्व विजेता ॥  
प्रिय लेखक प्रिय गूढ़ प्रवक्ता । भुत-भविष्य के आप विधाता ॥  
आयुर्वेद ज्योतिष के सागर । षोडश कला युक्त परमेश्वर ॥  
रतन पारखी विघन हरंता । सन्यासी अनन्यतम संता ॥  
अदभुत चमत्कार दिखलाया । पारद का शिवलिंग बनाया ॥  
वेद पुराण शास्त्र सब गाते । पारेश्वर दुर्लभ कहलाते ॥  
पूजा कर नित ध्यान लगावे । वो नर सिद्धाश्रम में जावे ॥  
चारो वेद कंठ में धारे । पूजनीय जन-जन के प्यारे ॥  
चिन्तन करत मंत्र जब गायें । विश्वामित्र वशिष्ठ बुलायें ॥  
मंत्र नमो नारायण सांचा । ध्यानत भागत भुत-पिशाचा ॥  
प्रातः कल करहि निखिलायन । मन प्रसन्न नित तेजस्वी तन ॥  
निर्मल मन से जो भी ध्यावे । रिद्धि सिद्धि सुख-सम्पति पावे ॥  
पथ करही नित जो चालीसा । शांति प्रदान करहि योगिसा ॥  
अष्टोत्तर शत पाठ करत जो । सर्व सिद्धिया पावत जन सो ॥

श्री गुरु चरण की धारा । सिद्धाश्रम साधक परिवारा ॥  
जय-जय-जय आनंद के स्वामी । बारम्बार नमामी नमामी ॥

PDF Credit : 360Marathi.in